सफल जहाजिओं की अजब दास्ताँ

A True Story of The Indenture Days Fiji

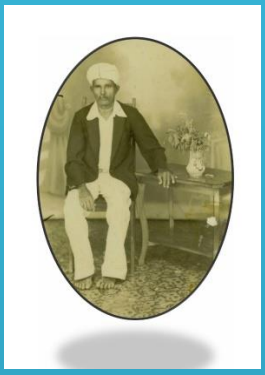

Collated & Written By
Dr Ram Lakhan Prasad

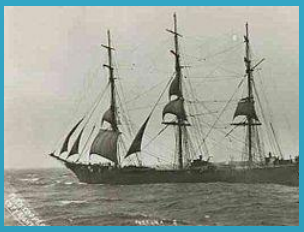

हमारे पूर्वजों की सच्ची कथा

Published 2018

सफल जहाजिओं
की
अजब दास्ताँ

हमारे पूर्वजों
की
सच्ची कथा

लेखक

डॉक्टर राम लखन प्रसाद

सफल जहाजिओं की अजब दास्ताँ

हमारे पूर्वजों की सच्ची कथा

यह हमारी आत्म कथा है और आप इसे हमारी राम कहानी ही समझें तो बेहतर होगा | मुझे मेरे आजा आजी से बचपन से ही एक अनोखा लगाओ हो गया था क्यों की घर में सब से बड़े पोते होने के नाते वे हमे बड़े प्यार से देख भाल करते थे | मैं दस साल का था जब हर शाम को मेरे आजा आजी मुझे तुलसीदास की रामचरित्र मानस की कुछ चोपाई और दोहा बांचने को कहा करते थे | इसी बीच जब बिसर्जन होता था तब वे अपनी गिरमिट की दुःख भरी और दर्दनाक घटनाओं का उल्लेख बड़े बिस्तार पूर्वक हम से किया करते थे | मै भी उन से कई सवाल किया करता था और वे सही जवाब देने से कभी हिचकिचाते नहीं थे |

एक बार हम ने अपने पागलपन में उन से एक बड़ा बेढंगा सवाल कर बैठा पर उन का जवाब मेरे मन में भा गया था | "आजा जी, जब आप लोग फीजी पहुंचे और तब अगर एक आदिम निवासी स्त्री के साथ विवाह कर लेते तो आज हमारे सामने जो जमीन की समस्या है वह कुछ हद्द तक हल हो सकती थी |"

मेरे आजा को इस सवाल से कोई अचरज नहीं हुई और वे बोले , " पहली बात तो यह है की मेरी शादी तेरे आजी के साथ जहाज पर ही हो चुकी थी तो मै दूसरी शादी नहीं कर सकता था | पर मान लो की मेरी शादी नहीं हुई होती तब भी मैं ऐसा नहीं कर सकता था क्यों की उस समय के काईबीती लोग बड़े खतरनाक थे और वे सदा हम से दूर अपने कोरो में रहते थे | फिर एक और बात है जो तुम आज नहीं समझोगे और वह यह की उस समय की आदिम निवासियों की लड़कियां देखने में बड़ी भयानक और बदसूरत लगती थीं | उन से शादी करने की बात तो दूर थी, हम उन के नजदीक भी नहीं जा सकते थे |" इतना कह कर आजा हंस पड़े और उस हंसी का मतलब मुझे आज समझ में आ रहा है |

अब आप ही देखिये की मेरेआजा आजी संस्कारी लोग तो थे ही पर वे हाजीजवाबी भी थे | उन्हें सच बोलने से कोई नहीं रोक सकता था | इसलिए उन की सच्ची घटनाओं को मै ने इस आत्म कथा में बयान करने का निश्चय किया जिससे अन्य लोग यह जान जाएँ की गिरमिट के दुःख दर्द और ताड़ना कितने दारुण और सोचनिये थे | इतना दुःख काट कर और तकलीफ सह कर भी हमारे पूर्वज के लोग हमारा भविष्य बना गये हैं | हमे उन के मेहनत और दूर दर्शिता पर गर्व है |

जब दुनियां भर में गुलामी की प्रथा की अन्त हुई तब दुर्भाग्य से हिंदुस्तान की बारी आ गई | विलायत के सरकार के मदद से ओस्देश के एक जबरदस्त व्यापारिक कंपनी , जिसे सीएसार (CSR) के नाम से जाना जाता था, ने अपना जटिल अधिकार फीजी के सरकार पर डाला | वहां के सरकार को प्रभावित किया जिससे उन के गन्ने के खेतों में आदिम निवासियों के स्थान पर भारतीयों के कृषि सम्बन्धी हुनर को काम में लाया जाए | यही मानलो की वे चुने हुये भारतीयों को जोर जोर से पुकार रहे थे ," आओ जहाजी हमारी खेती करो !" क्यों कि यहाँ के काईबीती लोगों का आचार विचार गन्ने के खेती से मेल नहीं खाती थी |

गुलामी तो दुनियां से मिट गई थी और ब्रिटिश सरकार इस प्रथा को फिर वापस नहीं ला सकती थी क्योंकि सारा संसार उन पर थू थू करती | इसीलिए चालाकी से एक नये शर्तबंदी प्रथा को प्रचलित किया गया जिसे इन्देंचर सिस्टम के नाम से जाना जाने लगा था | जहाँ गुलामी प्रथा में काले लोग जीवन भर के लिये बिक जाते थे वहीँ हमारे पूर्वज पांच या दस साल के लिये बंधने लगे | उन को खरीदने या बाँधने वाले बड़े चालाकी से उन्हें अपने मीठी मीठी बातों से भारतवर्ष के अनेक जिलों से फंसा कर बटोर लेते थे और कई ब्रिटिश सरकार के उपनिवेशों में जहाजों पर लाद कर ला पटकते थे |

किस्मत उन की खराब थी जो इस खतरनाक जाल में फंस गये थे पर परमात्मा के दया से जब उन्हें पांच या दस साल के बाद आजादी मिली तब उन की देश भक्ति , मेहनत और तरक्की करने की चाह को देख कर आज उन का देश फीजी ही नहीं पर दुनियां उन की बड़ाई करती है | आज लगभग दो

सदियों के बाद उन्हीं उपनिवेशों के औलाद अपने अपने नयी मात्र भूमि को अपना मादरे वतन मान कर बड़े प्रेम भाव से और लगन से देश की सेवा करते रहे जिस से देश की दिन दुगनी और रात चौगुनी उन्नति होती रही ।

उन नए पीढ़ियों के बंसज जहाँ धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक परिवर्तन करने में अपना सही हाँथ बताते रहे वही राजनितिक सञ्चालन में भी दिलचस्पी लेते रहे । हालांकि उनको बहुत दिन तक पुरे तौर पर नागरिकता का सही लाभ नहीं मिला फिर भी उनका योगदान सदा नेक और देश भक्ति से भरपूर रहा । आज देश के सभी कोने में उन गिरमिटियों के बंसज अपना गहरा योगदान दे रहें हैं जिस से देश की उन्नति होती रहती है ।

सन १८७९ से लेकर १९१६ तक सीयसार (CSR) ने ब्रिटिश सरकार के मदद से कई किसम के आरकाठियों को इस काम के लिये चुना था| उत्तर प्रदेश के कई जिले और अन्य गाँव में पोंगें पंडितों को पीली झुल पहना कर उन से वहां के अनजान और कच्ची उम्र के लड़के लड़कियों को धोखा से बहका कर इस प्रथा में भरती कराये जाते थे | ऐसे लोगो को इस लिये आरकाठी के रूप में चुना जाता था जिससे वहा के भारतीये लोग उन का विशवास कर सकें |

इन आरकाठियों याने कंपनी के चालाक नियोक्ताओं का काम था की वे हष्ट पुष्ट हिन्दुस्तानियों को चुन चुन कर जगह जगह पर बंदरगाहों के समीप डेपो में जमा करे और जहाज़ों में भर के उन्हें फीजी देश में ला पटके जिससे सीयसार के गन्ने की खेती सदा लहराती रहे और मजदूर बेचारे रोते रहे | शायद बिधि के विधान में ऐसा ही लिखा था और

हमारे पूर्वज इस गंभीर सामाजिक और राजनीतिक तूफ़ान के झपेट में पड़ कर हजारों मुसीबतों का सामना करते हुये फीजी देश को आबाद किया |

यह गिरमिट की भयानक और दर्दनाक प्रथा सन अठारह सौ उनहत्तर (१८७९) में शुरू की गई थी और उन्नीस सौ बीस (१९२०) में ख़त्म की गई थी । उन चालिस वर्षों में हिन्दुस्तानियों पर उन दिनों के अफसरों और कोलम्बरों द्वारा बेरहमी से कितने जुर्म लगातार ढाये गये इस का अनुमान आज का कोई साधारण व्यक्ति लगा ही नहीं सकता है क्योंकि वे इतने दर्दनाक, भयानक, निर्लज और दुखदाई थे । फिर भी हमारे वतन के प्रवासियों ने इन सब तकलीफों को सहन करके अपने भावी संतानों के लिये कितने बलिदान दिए थे कि आज जहाँ फिजी देश आजाद, आबाद और अमनचैन है वहीँ सारे संसार में देश की जय जय कार हो रही है ।

इतना सब जानते हुये भी हमारे कुछ नये वर्ग के पढ़े लिखे विद्यार्थी कह रहें हैं कि गिरमिट की कहानिया को हम बढा चढ़ा कर बताते हैं क्योंकि अमेरिका के काले लोगों की गुलामी की दास्ताँ फीजी के भारतियों से और भी खराब थी | हम मानते हैं की उन काले लोगों पर भी बेसुमार जुर्म ढाये गये थे पर हम अपने गिरमिटियों के दुखों और तकलीफों पर परदा तो नहीं दाल सकते हैं | जो उन पर बीता था उसे आजकल के छोकडों को क्या पता है |

जो झेल चुके थे वे अपनी अपनी दुःख भरी कहानी अपने परिवार वालों को बता गये थे | उन की कहानियों पर गलत टीका टिपन्नी करना तो हमारे लिये बहुत ही

बेवकूफी की बात होगी | अगर हम ऐसा करते हैं तब हम उन पीड़ित और लाचार हिन्दुस्तानियों के प्रति अपना असम्मान दिखा रहें हैं |

सरजू महाजन हमारे आजा थे जो हिन्दुस्तान के बस्ती जिला के दुमरिआगंज थाना के सेंदुरी गाँव के रहने वाले थे | उस समय वे करीब तेरह या चौदा वर्ष के नौजवान थे जो अपने पिता शंकर और उन के दो भाइयों , बिपत और रघुबर, के साथ आम और अन्य फलों की खेती में जुटे रहते थे | आम और महुए के बड़े बड़े पेड़ उन के जमीन में लहरा रहे थे और सारा परिवार उन फलों को बेच कर अपना खाना खर्चा चलाते थे | खेती छोटी और परिवार बड़ा यह सोच कर उन के पिता उन को पास के गाँव के एक दोस्त अमरनाथ के बहुत बड़े जमींदारी में नौकरी पर लगा दिए थे | मेरे आजा को वहां रहने का प्रबंध भी हो गया था और वे अपने नये काम को तन मन लगा कर करने लग गये थे |

मेरे आजा जी महीने में एक बार दो तीन दिनों की छुट्टी पर अपने घर जाया करते थे | इस बार आम के फलों का बहार था और जिस दिन उन को अपने घर जाना था उस दिन जोरों की पुरवैया हवा चली और कई गद्दर और पके आम जमीन पर गिर पड़े थे | उन्हों ने उन में से कुछ फलों को चुन कर अपने बसते में रख लिया था और घर ले जाने को अपने सामान ले साथ रख कर तैयार हो रहे थे की उन पर अमरनाथ के सरदारों ने आम की चोरी करने का इल्जाम लगाया |

बात अमरनाथ तक पहुँच गई और मेरे आजा को दो चार कडुवे बातें भी सुनने को मिले | उन की लाख सफाई देने पर भी

अमरनाथ ने उन को काम से निकाल दिया और कहा की यह सब बात वे एक चिट्ठी में लिख कर आजा के पिता शंकर के पास भेज देंगे | मेरे आजा के पास धन दौलत तो थे नहीं पर स्वाभिमान तो था | उन को इस बेइज्जती को सहने की ताकत ही नहीं रही और सब कडवी बातें उन के दिल पर तीर के समान लगी |

तीर का घाव समय ले कर भर जाता है पर कडुवे बातों की जखम जीवन भर कस्ट देता है | मेरे आजा एक बड़े धार्मिक और संस्कारी परिवार के खास अंग थे और इस कलंक को नहीं सहन कर सके | अगर वे अपने घर गये तब पिता और अन्य परिवार के ताने सुनने पड़ेंगे इसीलिए फिलहाल वे अपने घर न जाने का निश्चय कर के कोई दूसरी नौकरी के तलाश में चल पड़े | आजा ने अपना झोली झंडा उठाया और वहां से चल पड़े | चलते चलते नौकरी की तलाश में वे काशीपुर पहुंचे |

अभी शहर में प्रवेश भी नहीं कर पाए थे की एक धूर्त आरकाठी की चालाक नजर उन पर पड़ गई | मेरे आजा के दुखी चेहरे को देख कर वह उन पर ऐसा लपका जैसे कोई शिकारी कुत्ता एक भागते हुये इंसान पर झपटता है | इधर उधर की कुछ बातें करके वह आखिर पूछ बैठा ," कैसे हो दोस्त ? कोई काम खोज रहे हो क्या ? "

"काम याने नौकरी ? अरे जनाब आप नेकी भी करना चाहते हैं और फिर पूछ पूछ | कैसी नौकरी है और कितना तलब मिलेगा?" मेरे आजा ने बड़ी आतुरता से उस आरकाठी के तरफ देखते हुये पूछा |

बस अब क्या था मेरे आजा न जानते हुये भी उस के पंजे में फंसने वाले ही थे| आरकाठी ने अपनी ख़ुशी छुपाते हुये बहुत हमदर्दी दिखाया और अपने जाल में फंसाने के लिये कहने लगा , " अजी दोस्त, यह कोई नौकरी थोड़े है ! इसे तो एक पिकनिक या सैर सपाटा ही समझो, क्यों की यह तुम्हारा भाग्य खोलने का एक सीधा और सरल रास्ता है | विशवास करो भैया यही रास्ता थोड़े ही दिन में आप जैसे नसीब वाले इंसान को धनवान और सुखी बना देगा |"

उस की चिकनी चुपड़ी बातें सुन कर आजा जी ने खयाली पुलाव चखना शुरू कर दी थी पर वह आरकाठी कहता गया, "मेरे यार, तुम ने सुना होगा की कलकत्ता से थोड़ी ही दूरी पर समुद्र तट पर एक बड़ा ही सुन्दर और धनी प्रदेश है जिसे लोग रमणीक देश के नाम से जानते हैं | वहीँ पर मेरा एक जान पहचान का बहुत धनी जमींदार रहता है जिस के पास एक बहुत बड़ी खेती बारी है | उन्हीं के घर और जमींदारी के रखवाली करने वाला एक सिक्यूरिटी गार्ड चाहिए | अच्छे तलब के अलावे पहनने के लिये युनिफोर्म , रहने के लिये एक फार्म हाउस और तीनो पहर के पके पकाए भोजन मिलेंगे | हाँ , पर पूरे बारह घंटे का काम रहेगा जहाँ तुमको अपने कंधे पर बन्दूक लटकाए हुये पूरे जायदाद और जमींदारी के इर्दगिर्द चक्कर लगाते रहना पड़ेगा | ऐसी नौकरी और कहाँ मिल सकती है ? बस वहां चैन से काम करना और मौज में रहना | इस से अधिक तुम्हारे जैसे नौजवान को और क्या चाहिए? "

उस चपरासी की बातें सुन कर मेरे आजा के मन में घी के लडडू फूटने लगे थे और वे अब ज्यादा नहीं सुनना चाहते थे | वे अब अपने सपने की दुनियां में घूमने लगे थे | वे अपने आप को एक पोशाक पहने हुये सिपाही को अपने कंधे पर बन्दूक लिये खेतों में घूमते और मार्च करते हुये अभी से ही देखने लग गये थे | आजा सोचने लगे थे की आज उन का भाग्य खुल गया है और अब भले दिन जल्द ही आने वाले हैं | इस से बढ़ कर और क्या चाहिए! बस वे एक शेखचिल्ली के तरह अपने नये जिंदगी की कल्पना करने लग गये थे | मेरे आजा ने उस आरकाठी को कितने धन्येवाद दिए और उस कृत्रिम नौकरी को स्वीकार कर के उस के साथ जाने को तैयार हो गये |

एक और मछली उस आरकाठी के जाल में फंस गई, यह सोच कर वह बहुत खुश हुवा और बगल में हलवाई के दूकान से कुछ मिठाई और कुछ भोजन लाकर मेरे आजा का मूह मीठा करवाया | आजा के ख़ुशी का ठिकाना न रहा और उस चालाक आदमी पर उन का पूरा विशवास और भरोसा हो गया था |

लेकिन वहां से इक्के की सवारी से जब वे डेपो पहुंचे तब वहां के सब हाल को देख सुन कर उन का खयाली पुलाव सब मिट्टी में मिल गया, उन की सब आशाएं मर गई और वे मानो आसमान से आकर जमीन पर धडाम से गिर पड़े थे | थोड़ी देर के लिये उन्हें होश ही नहीं रहा की वे कहाँ हैं |

उस डेपो में इन आरकाठियों के जाल में फंसे लोगों की भीड़ लगी थी और वे सब अपने अपने भूल पर पश्चताप कर रहे थे , कुछ रो रहे थे, चिल्ला रहे थे और कुछ तो शर्म के मारे चुपके चुपके आंसू बहा रहे थे | उन सब की रुदन सुनने वाला वहां कोई नहीं था | वे सब सताए जा रहे थे और वे सहन करने के सिवाए और कुछ कर नहीं सकते थे |

मेरे आजा का कहना था की वहां केवल नये नौकर नहीं थे पर कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें स्वदेश प्रेम उन को उन के गिरमिट से लौटा तो लाई थी पर जात पात और छुवा छूत के वहां के समाज के ठेकेदारों ने उन्हें उन के गाँव से छांट कर निकाल दिया था | अब वे बेचारे जाते तो जाते कहाँ और दुर्भाग्येवस फिर इसी नरक में आ कर फंस गये थे |

वहां के लोगों की सच्ची कहानी सुन कर और नौकरी की असलियत जान कर मेरे आजा के होश हवास उड़ गये | बस यही समझलो की वे उस पिंजरे के पन्छी के तरह तड़प रहे थे जिस का दर्द कोई न जान सकता था | मोहम्मद रफ़ी तो वहां नहीं थे जो उन दुखियारों को अपना नगमा सुनाते , "पिंजड़े के पन्छी रे तेरा दर्द न जाने कोए..बाहर से तू खामोश रहे पर भीतर भीतर रोये .."

गिरमिट से लौटे हुये लोगों की बातें सुन कर मेरे आजा बड़े सोच में पड़ गये थे | वे इतना जान चुके थे की उन को कहीं समुद्र पार की दूर देश में जाना था और वहां कई मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा | मजबूत पहरे सब तरफ थे और वहां से निकलने की बात छोड़ कर आजा जी अपने आने वाले दुःख

तकलीफों के बारे में सोचने लगे थे | कुछ लोगों का कहना था की उस समुद्र पार वाले देश में अंग्रेजों के गन्ने के खेतों में पसीना बहाना होगा और कई अन्ये काम करना पड़ेगा | कुछ भी कहने की हिम्मत करने पर सजा मिलेगी और साहब या सरदार के लात,घुसे और जूते खाने पड़ेंगे | यह सब सोच कर उन का मन तो रो ही रहा था पर अब तन भी तिलमिलाने लगा और आत्मा बेजान हो चली थी | वे कहाँ आ फसे ? इस से तो अच्छा गाँव की गरीबी और घर वालों की घुड़की और झिडकी ही रहती |

सिपाही बनने के झूठे सपने टूट गये पर आजा जी ने हिम्मत कर के आरकाठी के पास गये और बड़े धीरे से बोले , "भैया जी , मै अपना घर छोड़ कर बिदेश नहीं जाना चाहता , मुझे नौकरी नहीं करनी है और आप मुझे दया कर के यहाँ से निकल जाने दीजिये |"

आरकाठी तो वही था पर उस के तेवर और स्वाभाव बदल चुके थे | वह गुस्से में आ गया और गरज कर बोल उठा , "तुम कैसे आदमी हो , तुम्हारे अकल ठीक तो हैं ? में ने तुम्हे भोजन कराया और इक्के पर बैठा कर यहाँ लाया | अगर तुम्हे नौकरी नहीं करनी थी तो मेरे दस रूपये क्यों खर्च कराया ? फिर हमारा समय भी बर्बाद कराया | इसलिए पहले हमारे सब मिला कर बीस रूपये लौटा दो तब चले जाना | " मेरे आजा के पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी और अब वे वहां से जाने के लिये बीस रूपये कहाँ से लाते ? उन को वहां से बाहर जाने का कोई रास्ता नजर नहीं आया | उन का भविष्य एक काली अमावस्या की रात बन कर रह गई |

आखिर वह मनहूस घडी आ ही गई जब डेपो के सभी रंगरूटों को एक जिलाधीश के सामने पेश किया गया जिससे उन सब की रजामंदी ले कर उन की अग्रीमेंट पक्की कर दी जाये | मजिस्ट्रेट ने केवल एक सवाल पूछा था , " तुम को फीजी में नौकरी करना कबूल है ? "

आजा अंग्रेजी तो जानते नहीं थे पर आरकाठी के कहने के मुताबिक मेरे आजा को मजबूरन कहना पड़ा,"हाँ साहेब |" मेरे आजा के इन दो शब्दों ने उन की जिंदगी बर्बाद कर के रख दी थी | बस पांच साल ले लिये उन के भाग्य का फैसला हो गया था | उन की एक छोटी सी हाँ ने उन के पैरों में गुलामी के जंजीर पहना दिए थे |

काशीपुर के डेपो से कड़ी निगरानी में उन सब को कलकता पहुँचाया गया | वहां सैकड़ों अभागे जहाज का इंतज़ार कर रहे थे | उन में स्त्री, पुरुष और कुछ बच्चे भी थे | सभी के तरह मेरे आजा के दिल में दर्द, चहरे पर महान चिंता और आँखों से दो चार आंसू भी टपक रहे थे | मेरे आजा और आजी के अनुसार यह डेपो इस धरती पर उन दोनों के लिये नरक से भी ख़राब था |

मेरे आजी का शुभ मिलन मेरे आजा से उसी डेपो में हुआ था | लेकिन मेरे आजी की दास्ताँ तो और भी दर्दनाक है | उन का नाम माता पिता ने बड़े प्रेम से गंगा देई रखा था क्योंकि वे गंगा की तरह बड़े शांत सवभाव की थी और गंगा जैसी सुख देने वाली एक सुन्दर और सुशील कन्या थी | उन का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला के सीतापुर गाँव में हुआ था | इस किसान परिवार के चार बच्चों में सब से छोटी थी और माता

पिता की बड़ी दुलारी थी | उन के बचपन के बारे में बहुत कम जानकारी है पर उन के भाई राम खेलावन के अनुसार वे एक बुद्धिमान और प्रभावशाली औरत थी |

जब उन की बचपन की नैया सुचारू रूप से चल रही थी और वे केवल बारह वर्ष की थी तो ठीक उसी समय उन के भी जीवन में एक बहुत बड़ा तूफ़ान आ गया था | उस समय अयोध्या में एक बड़ा मेला लगा करता था और मेरी आजी और उन के भाई गाँव के एक धार्मिक मंडली के साथ मेला देखने चल पड़े थे | इस मेले में ऐसी भीड़ जमा हो जाती थी की उस के धक्कम धुक्की में बड़े बड़ों के छक्के छूट जाते थे |

स्त्री और बच्चों को बड़ा संभाल कर चलना पड़ता था | आजी के गाँव का गुट धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था क्योंकि उन्हें एक दूसरे से बिछड़ जाने का डर लगा रहता था | एक भयंकर ठेलम ठेल में गाँव के सब साथी छितर बितर हो गये और एक दूसरे से अलग हो गये | आजी ने इधर उधर नजर दौड़ाया और कुछ देर तक अपने साथियों और परिवार वालों को ढूंढती रही पर किसी को नहीं पाया | अन्त में थक कर एक किनारे बैठ गई |

आजी अपने लोगों को मिलने के लिये तड़प रही थी और उन की दशा मानो जल से निकाल दिए गये मछली की तरह हो रही थी | उन के सर पर जैसे आसमान ही टूट पड़ा था और पैरों तले जमीन खिसक गई थी | वे वही सोचने लगीं की वे अब कहाँ जाएँ और किससे सहायता ले | उस समय की लड़कियां तो परदे ही में रहती थी और कोई ऐसी संस्था या समिति भी

नहीं थी की जहाँ से उन्हें कोई मदद मिल सकती थी | रोने के सिवा उन के पास कोई चारा ही नहीं बचा था |

आजी को रोते और दुखित अवस्था में देख कर एक पीला झुल्ल वाले पंडित उन के पास आये और बड़े प्रेम से उन से बोले, " बेटी , रोटी क्यों हो ? क्या परिवार वालों का साथ छूट गया है ? डरने की कोई बात नहीं है | मै एक हिन्दू ब्राह्मण हूँ और तुम्हारी सहायता करना हमारा परम धर्म है |"

ऐसा आसवासन पा कर आजी का रोना कुछ कम हुआ मानो खुद भगवान् ही उन के सामने उन का उद्धार करने को आ खड़े हो गये थे | उन्हों ने अपने उत्तम शिस्टाचार के मुताबिक बड़े इज्जत से पंडितजी को शीश नवाया और अपनी करुना भरी कथा को सुनाया | उस पोंगे पंडित को मालूम पड़ गया की मेरी आजी दुःख की मारी है क्यों की वह मेले में खो गई है | उन्हें मदद की शक्त जरूरी है | उस आरकाठी के ख़ुशी का ठिकाना न रहा , क्योंकि एक और मछली उस के जाल में फंसने ही वाली थी | लेकिन आरकाठी ने अपना निजी मनोभाव छिपाते हुये बाहर से ऐसी दया दिखाई जैसे उन्ही की बहन बेटी पर दुःख आ पड़ी है |

आरकाठी ने मेरे आजी को धीरज दिलाया और बड़ी ममता दिखाते हुये बोला, " बेटी , अब जो होना था सो हो गया है पर तुम को अब कोई सोच करने की जरूरत नहीं है | हम हैं तुम्हारे मदद के लिये और मै अभी एक रिक्शा मंगाता हूँ और तुम को घर पहुंचाता हूँ |"

मरीज जो चाहता था उस का डाक्टर मिल गया | आजी तो घर जाना चाहती थी और वह पोंगा पंडित उन की यह इच्छा

पूर्ति करने के लिये खड़ा था | आजी ने उस अधेड़ ब्राह्मण पर विशवास किया और उस के साथ घर जाने को तैयार हो गई | मेरे आजी को क्या पता था की वे किसी जंगली कुत्ते के मुह में अपना हाँथ ड़ाल रही हैं | आरकाठी ने इशारा से एक रिक्शे वाले को बुलाया जो पहले से उस का इन्तजार कर रहा था | उस में वे बैठ कर मेले के भीड़ भाड़ से किसी अज्ञात मंजिल की ओर चल पड़े |

आजी अब एकदम उत्सुक हो रही थी अपने घर पहुँचने को पर उन की यह प्रतीक्षा गई चूलेह के भाड़ में ओर फिजूल हो गई | आरकाठी ने उन्हें वहां से सीधे डेपो में पहुंचा के दम लिया |जब आजी को यह मालूम हुआ की वह पोंगा पंडित एक विश्वासघाती कुली भरती कराने वाला आरकाठी था तब उन के दुःख कई गुने बढ़ गये ओर वे फिर रो पड़ी | उस पोंगे पंडित पर विशवास कर के आजी अपने आप को सदा कोसती रहीं पर अब बहुत देर हो चुकी थी |

मेरी प्यारी भोली भाली आजी अब असल में मानो एक जेलखाने में आ गई थी जहाँ से बाहर निकालना मुशकिल ही नहीं पर असंभव था | उस ने देखा की इस डेपो में ओर भी अनेक अभागे लोग बैठे हुये अपनी अपनी किस्मत ओर तकदीर को कोस रहे थे | उन सब का भविष्य अनिश्चित था ओर उन सब की जीवन नैया जैसे एक गहरे समुद्र के जालिम हिलकोरों से टकरा रही थी | किसी को कुछ सूझता नहीं था | बस उन का दिल रो रहा था ओर आँखें भरी थी |

उन आरकाठियों को तो जल्दी थी इसी लिये दूसरे ही दिन सब रंगरूटों को फीजी में गुलामी करने का अग्रीमेंट एक न्यायधीश के सामने बनाया गया | उन सब की गिरमिट लिखा दी गई |

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below